उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा २०१४-१५

UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY, HALDWANI (NAINITAL)

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

DPHCN-10 FIRST SEMESTER ASSIGNMENT

डी०पी०एच०सी०एन०- 10 प्रथम सेमेस्टर सत्रीय कार्य

Last Date of Submission: 31/01/2015 **जमा करने की अन्तिम तिथि: 31/01/2015**

Course Title: Nutrition Education **Course Code: DPHCN-04**

कोर्स शीर्षक : पोषण शिक्षा **कोर्स कोड: डी०पी०एच०सी०एन०-04**

Year: 2014-15 **Maximum Marks: 20**

सत्र: २०१४-१५ **अधिकतम अंक: 20**

Section: A

भाग: क

Section 'A' contains 08 short answer type questions. Attempt any 4 questions. Each question carries 2.5 marks. Answers of short answer-type questions must be restricted to 250 words approximately.

भाग क में आठ लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं। इनमें से केवल चार प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए 2.5 अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये।

Briefly discuss the following:

निम्न की संक्षेप मे चर्चा कीजिए:

1. रक्ताल्पता के कुप्रभाव
2. संचार की प्रक्रिया
3. आयोडीन तथा लौह लवण के मुख्य भोजन स्रोत
4. फ्लोरोसिस के नैदानिक लक्षण
5. बुजुर्गों के लिये पोषण शिक्षा
6. जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में आयोडीन अल्पता विकार के लक्षण
7. पोषण शिक्षा की विभिन्न विधियां
8. मोटापे के कारक तथा रोकथाम के उपाय

Section: B

भाग: ख

Section 'B' contains 04 long answer-type questions of 05 marks each. Learners are required to answer 02 questions only.

भाग ख में चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये है, इनमें से केवल दो प्रश्नों के उत्तर देने है। प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच अंक निर्धारित हैं।

1. सामुदायिक पोषण को परिभाषित कीजिये। सामुदायिक पोषण शिक्षा के लक्ष्यों की व्याख्या करते हुए एक अनुभवी पोषण परामर्शदाता के समुदाय में विभिन्न कार्यों पर टिप्पणी कीजिए।
2. प्रोटीन ऊर्जा कुपोषण के विभिन्न प्रकारों की विस्तृत व्याख्या कीजिये।
3. विटामिन ए की कमी के नैदानिक लक्षण क्या हैं? समुदाय में विटामिन ए की कमी से बचाव के लिये आप क्या उपाय करेंगे?
4. राष्ट्रीय आयोडीन अल्पता विकार नियंत्रण कार्यक्रम के क्या लक्ष्य हैं? आयोडीन युक्त नमक की गुणवत्ता की निगरानी हेतु क्या कदम उठाए जाने चाहिये?